63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 645 Participant Code: 315

मेरी हमारी संस्कृति

हम सभी लोक सुख से जीनेवाला हमारा अपना देश, धरती का सबसे लंबा लोकतंत्र वाला हमारा भारतमाता। अपनी कवच कुंडल हिमालयी पहाड़ियों से हमें बस सुरक्षा ही नहीं देता पर हमारे कृषिस्थानों को भलभूई बनाता है। जिससे हम खेती करते और हमारा जीवन चलाते है। यह हमारा भारतीयों का एक बड़ा सा संस्कार का भाग है, क्या बात है, हमें हमारा भोजन हमारा देश हमें बहुत सस्ते में देता है। हम लोग भारतीय भगवान से अनुग्रहीत लोग है, हमें जो चाहिए वह हमें हमारा देश और भारतमाता देता है। पर क्या आज हम उस सभी वरदान का सही उपयोग सही समय में सही तरीके से करता है ?

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

* हमार अपना संस्कार

भारत के संस्कार और इसकी विविधता मे लेते जा रह मकता के बारे में इसकी सभी नागरीको को बहुत ही अभिमान और उसे लेकर अभिलाश होग, जरूर, पर शास्त्र यानी 'डिजीटल युग' के इस समय मों हम सभी लोग हमारा भारत का खेतीवाला संस्कृति भूल गया है/ भारत ने पिछले साल '2024' में शास्त्र, सेनाविन्यास, संविधान यानी विषयो में कई बार कदम उठा है/ पर हम सोचे कि हमारा संस्कृति का भाग होता जा रहा खेती में हम बहुत बडा सा कदम नही रख सका/

* खेती का आज का हालत

हमारे इसी गज राज्य में जो सबस बडा विभाग खेती और उससे उनुबन्धीत होता है/

हमे इनसान कोई आज इस भूमी में खेती करने का सभी मामलम होते है। यानी 'इरिगेषन,' क्रिम होशियारी, अच्छा पानी, भलभूई खेत यानी सभी चाह,। पर आज जब हम बच्चो से बात करते ते वे सब बोलता है कि मुझे 'डॉक्टर' बनना है, इन्जनीयर, पयलट, यानी पर, सौ में से किसी एक बच्चा भी नही बोलता, कि 'मुझे एक बडीया सा किसान बनना है।' यह सब ही है हमारा देश एवं इस धरती का खेती का हालत।

पिछले कभी दस से बीस साल पहले हमारे देश का एवं इस धरती में रहनेवाला सभी लोग किसानो था। और वे खेती करने से संतृप्त और खुशी थी। पर आज का इस जमाने में जब हमारे देश का तकनीकि आधे के ऊपर का

जनता अपना अपना स्मार्टफोन में खोया हुआ घर में बैठते है, तब खेती करने के लिए कोने खेत में चले जाना है। क्या आज का युवाओं खेत देखा है ? जब इसी प्रशन एक अध्यापक ने उसके कक्षा में पूछा, तब आधा से भी अधिक बच्चों बोला की "हाँ देखा है टी वी में" यह ही है हमारा इस जमाने का खेती का हालत।

चर्चा का विषय यह है कि हमारे देश में धान्य, गेहू आदी कहाँ से आता है; जिन लोग है ना जिनके पास बहुत विद्या नही है जो पढने के समय से ही काम कर ~~रह~~ रहे थे, जिन्हे पढने लिखने का मौका आधा ही मिला होगा जो इसी कक्षा में पास नही हुए थे और जिन्हे सब

आज बूढ़ा, बूढ़ी बन गई होगी, सोफि वो ही आज का इस ज़माने में खेती करने के लिए तयार है।

* खेत हमारा जीवन का रास्ता

खेत या खेती हम इनसान बल्की सभी जीवी-जानवरे का जान-जीवन का एक रास्ता है। पेड पौधा अपने आप खाना बनाता है, कि जिसे खाने के रूप में नह उनको शक्ती के रूप में उन्हें मिलता है। पर हम इनसान के यह ऊर्जा मिलने के लिए खेती ही करना पडेगा। सिर्फ खाना मिलने को छोडकर हम इनसान को खेती से कई तरह का गुण होता है। हमारा वायु मंडल का एक प्रधान भाग और जो इनसान को जीने के लिए बहुत ही सधारण चीज 'ऑक्सिजन जो खेती में बनानेवाला हरा-हरा पौधा हमे दे सकता है

और खेती में जो पौधों और पेड़ें हमारी धरती का संतुलना करने की हमारी मदद रखुग और वाहनों और करखाने से अधिक स्तिती में आनेवाली काला धुआ जो विश्व तापमान का कारण बन सकता है। खेती समूहवाला पेड़-पौधे उन्हे स्वीकार करने के बाद हमें शुद्ध वायु देने मे मदद करती है।

खेती को हम दो विभाग में ले सकता है खाद खेती और पैसा खेती "फूड क्रोप और काश क्रोप" वे दोनों हमारा मदद करता दोने बेचकर हम पैस कमा सकता है और जिसे चाहिए उनका उपयोग भी कर सकता है।

* खेती का रुकावट - जान का अंत

हमारे देश भारत और सभी देशों का समस्या है खेती करने के लिए हमारे इस जमाने में कई

नौत्पन्न होनेवाला आदमियाँ
कारण शस्त्र और मोबैल नहीं है / इसकी
है / खेती करना का बढावा
आज एक बड़ा सा
कठिनाई और बुरी काम नहीं है / हमारे
देश की और राज्य की सरकारें खेती
का बढावा देने के लिए कई सारे
कार्यक्रमों का आयोजन किया है "प्रधानमंत्री
किसान शक्ति संगठन" इसका एक बड़ा
सा उदाहरण है / खेती एक चीज है
जो कभी नष्ट में और कभी गंभीर लाभ
में पड़ सकता है नष्ट का होना
जैसा किसी जलभरी आना, बिना जल की
हालत पड़ना, पौधों का नाश हो जाना
यानी, इन सभी नष्टों से बचने के
लिए ही हमारा सरकारें इसी कार्यक्रमों
का आयोजन किया करता है /

* समस्या - जीवन में वापस का रास्ता

कोरोणा महामारी के बाद
जब हमारा सरकार ने सेनसस ले लिया

तब पता चला कि हमारे देश में कोविड के बाद खेती में बीस शतमान का कमी पड़ी है और हमारा यत्र का शस्त्र और विवर साकेतिक विद्या में करीबन पच्चीस शतमान का वर्दन भी हुआ है। हमारा जीवन का सभी जमाने में हमें एक बात की याद होना चाहिए, शस्त्र, कई सारे ऐकट, हवाई जहाज और कंप्यूटर के जैसा आधुनिक युग का सामान हम, हम इनसान भूकते समय नहीं खा सकते। खाने के लिए हमें पोषक समृद्ध खाना ही जरूर पड़ेगा।

विना काम से कई लोग।

मनुष्य जीवन का सबसे मुख्य और सुदर सा समय है एक इनसान का 25 से शुरु करके 65 तक का साल इसी लोगों को अंग्रेजी में 'लेबर पोटनषल' कहा जाता है।

जिनका मतलब है काम करने का कामयाब समय, पर हमारे दिल को चुभने वाला एक बात यह है कि भारत से शुरू करके इस धरती का कई राज्यों यानी पाकिस्थान, अफगानिस्थान, बंगलादेश जैसे देशों में भी ये लोग बिना काम वाला है जो घर होता तो उसमे और नही होता तो सड़क पर ही और रात सोया करता आ रहता है।

"सफलता एक दिन में नही आता। पर हमें उसमे रोज मेहनत करना पड़ता है।" - महात्मा गान्धी

हमारे देश का राष्ट्र पिता महात्मा गान्धी ने यह बहुत ठीक ही कहा है जब हम लोग बिना काम, काम नही है। जैसा बोलकर मोबैल में धोया घूमता रहता उसी समय हम खेत में जाकर मेहनत कर सकता है और हमारा परिवार

का खाना खिला सकता है। लोगों
हमारा चला गया संस्कार और काम
का रुकावटी का भी समस्या हम ओनी
से छूट सकते हैं।

धरती का सुन्दर स्थानों
में से एक, जीने के लिए बहुत
सस्ता, धरती की कवच कडल से संरक्षित
हम देश, अंग्रेजी के अधिकारी कम होते
से हमारा पूर्वीक चुना हुआ देश, सारे
जहाँ से अच्छा, विविधता में एकता,
यानी कई सविशेषताएँ होनेवाला हमारा
भारतमाता अपना संस्कृति को, से दूर
जाने हम कैसे दे सकता हैं। संस्कृति
सरिता का फूल उगने वाला हमारा भारत
का पुराना संस्कार, खेती को हम
नष्ट कैसे करेंगे? 'हाथ जोडेंगे और
हमारा देश का सिर ऊपर ही रखने
का कोशिश करू, जय हिन्द।-
जय भारतमाता।...